आधाफ़ुल के कारनामों की और भी हैं कहानियां।

सारी पढ़ डालो, एक भी कहानी छूट न जाए।

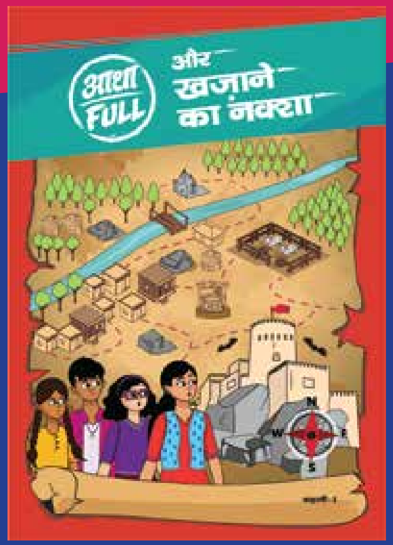

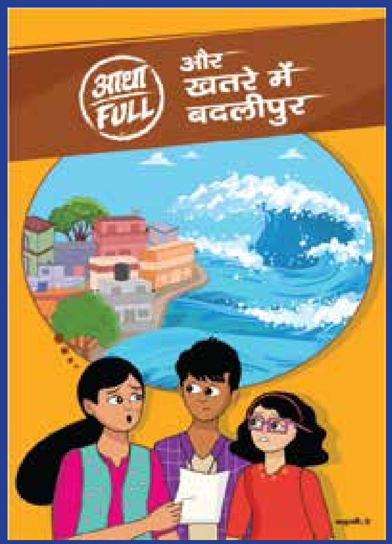

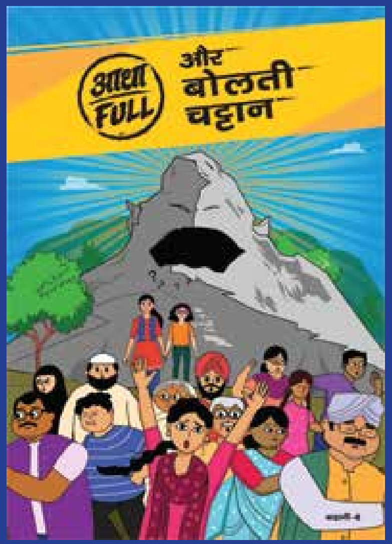

Developed and created by BBC Media Action
with support from UNICEF, DOVE and the Centre for Appearance Research

आधा FULL और गायब हाथी

कहानी –4

- नाम : किट्टी
- उम्र : 16 साल
- कक्षा : ग्यारहवीं
- गुण : जोश भी है और होश भी
- *किट्टी के लिए कुछ भी इंपोसिबल नहीं

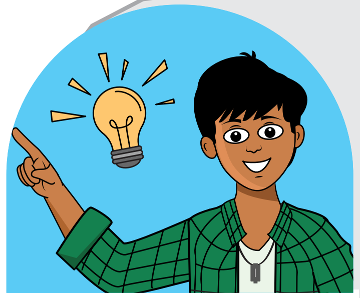

- नाम : अदरक
- उम्र : 15 साल
- कक्षा : सातवीं के बाद स्कूल छोड़ दिया
- गुण : एक नंबर का जुगाड़ू
- *अदरक के पास तरकीब की भरमार है।

बदलीपुर की 'टीम आधाफ़ुल'

- नाम : तारा
- उम्र : 12 साल
- कक्षा : सातवीं
- गुण : जानकारी की चलती फिरती किताब
- *तारा कभी झूठ नहीं बोलती

तीनों बदलीपुर में रहते हैं। तीनों को जासूसी करने का बड़ा शौक है। बदलीपुर में कुछ भी होता है तो तीनों पहुँच जाते हैं केस को सुलझाने। इन तीनो ने मिलकर एक टीम बनाई है जिसका नाम है, आधाफ़ुल।

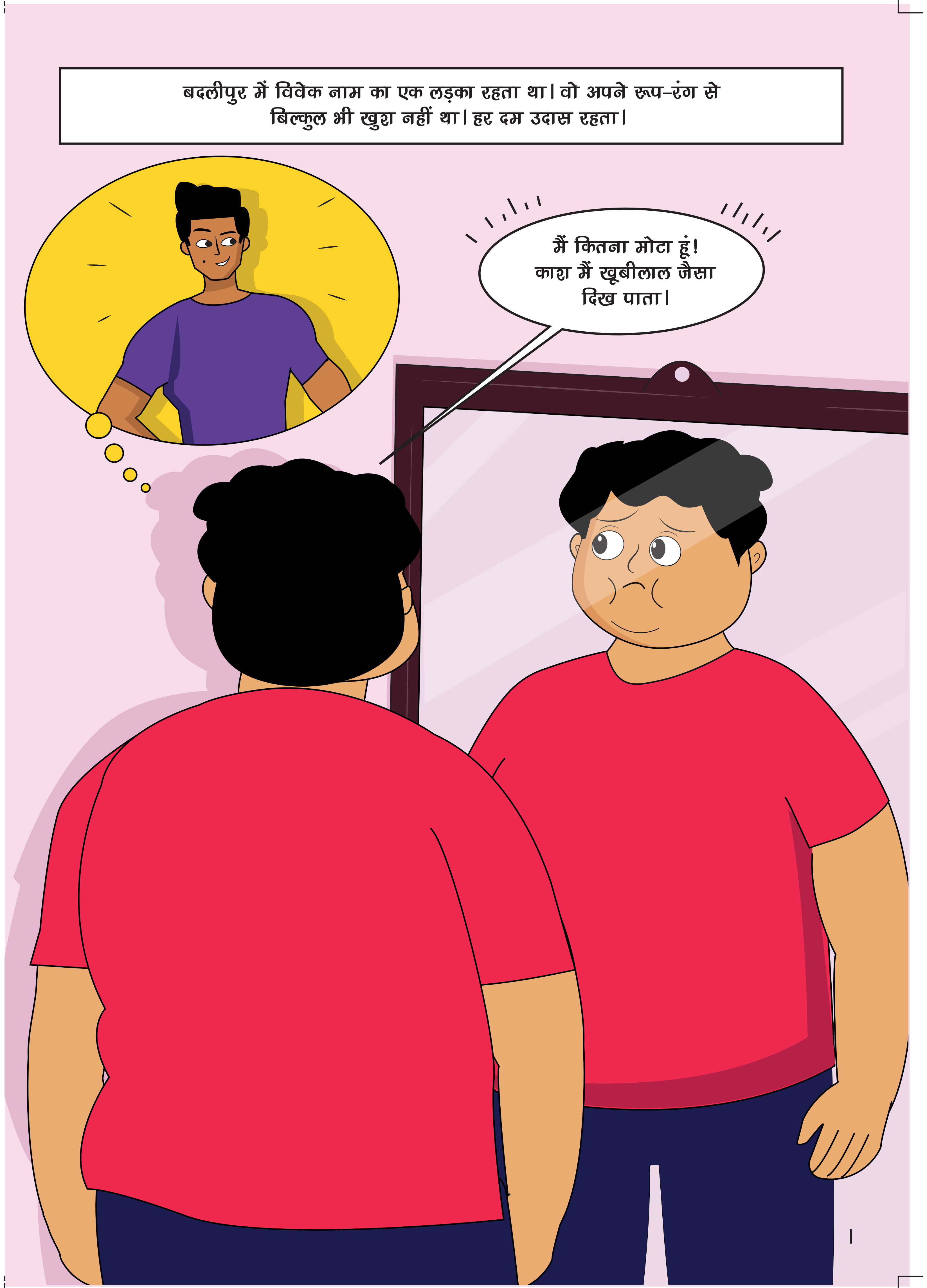

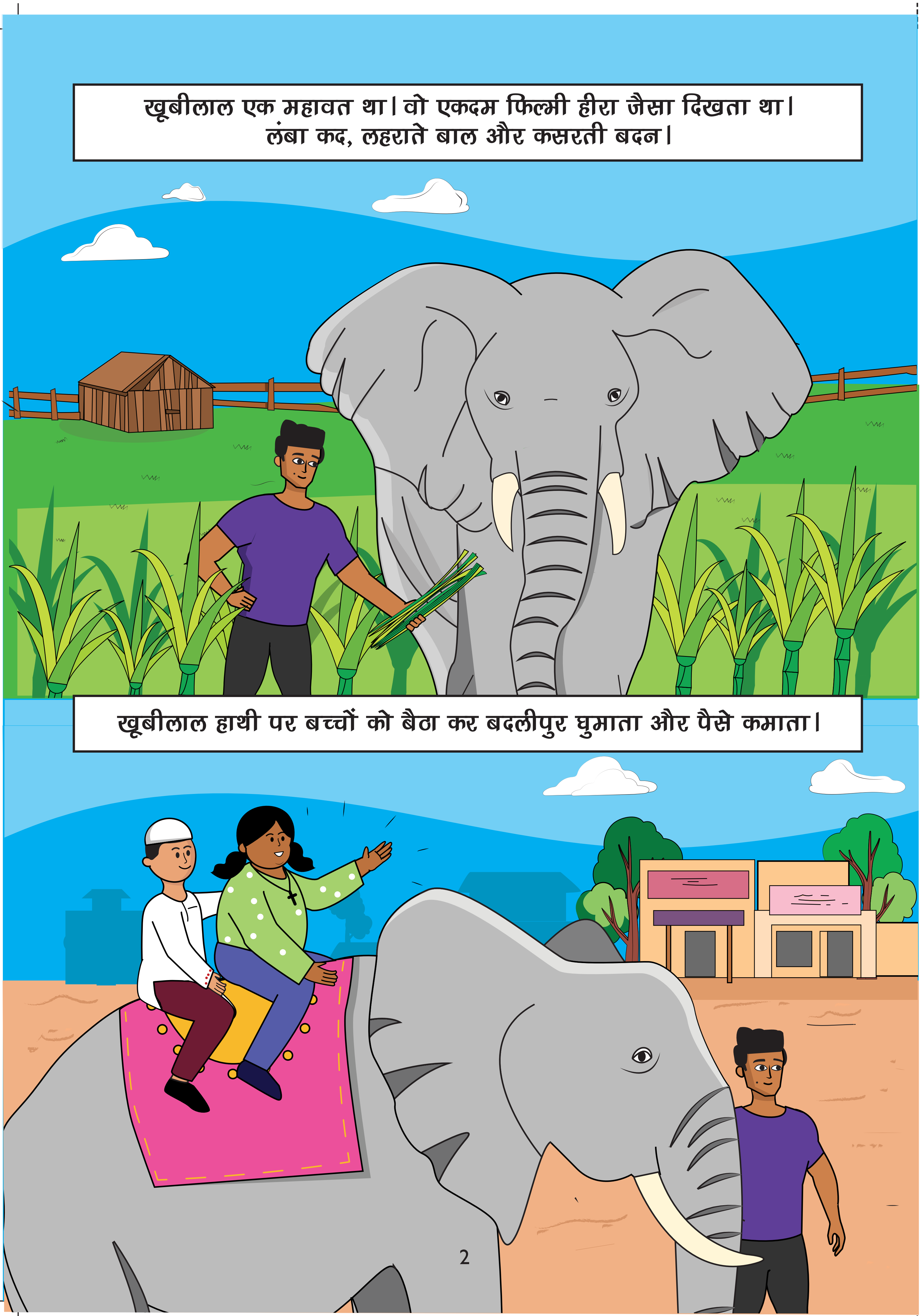

खूबीलाल हाथी को चराने के लिए उसे विवेक के खेत मे छोड़ जाता।
जहां हाथी दिन भर चरता और शाम को लौट आता।

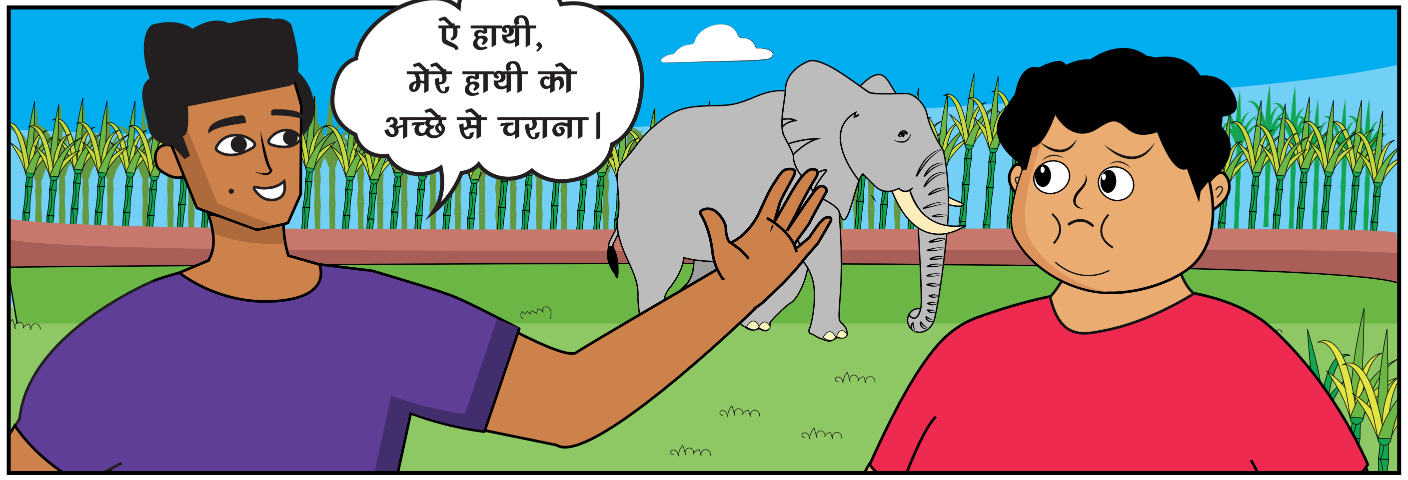

खुद की तुलना खूबीलाल से करते-करते विवेक और उदास रहने लगा।
विवेक इच्छा करने लगा कि काश वो भी खूबीलाल जैसा दिखता।

एक दिन खूबीलाल रोता हुआ आधाफुल के पास आता है।

मेरा हाथी गुम हो गया।
क्या! हाथी कैसे गुम हो गया?
मैं रोज़ हाथी के खेत मे अपना हाथी छोड़ के आता हूँ।
हाथी के खेत में?
वो है न मोटा सा लड़का, विवेक।
तुम्हे किसी को ऐसे नहीं चिढ़ाना चाहिए। तुमने तो सिर्फ एक शब्द बोल दिया, पर इससे सुनने वाले पर कितना बुरा असर होता है, पता है। वो खुद को हीन समझने लगता है, दूसरों से कमतर आंकने लगता है खुद को। तुम्हारी इस एक हरकत से अपना सारा आत्मविश्वास खो देता है। इसलिए भूलकर भी आगे से किसी को ऐसे मत चिढ़ाना, समझे और हमेशा सोच समझ के बोलना। अब बताओ, क्या हुआ था?
रोज़ हाथी अपने आप घर आ जाता। आज नहीं आया तो मैं लेने गया।
मुझे क्या पता हाथी का। वो तो यहां से कब का निकल गया।

पता नहीं मेरा हाथी कहां है। मुझे मेरा हाथी चाहिए।
मुझे पता है, तुम्हारा हाथी किसने लिया है।
किसने?
विवेक ने।
क्या सबूत?
मैं तारा की बात समझ गयी। सबूत विवेक के घर पर ही मिलेगा।
चारों विवेक के घर जाते हैं।
वो रहा हाथी।
उसका नाम विवेक है। उसे हाथी मत कहो।

मुझे पक्का यकीन है हाथी की गुत्थी यहीं सुलझेगी।
चलो उससे बात करते हैं।
क्या चाहिए? यहाँ क्यों आए हो?
विवेक, क्या तुमने खूबीलाल का हाथी देखा है?
मुझे कुछ नहीं पता।
घबराओ मत, जितना भी पता है बता दो।

विवेक तेज़ी से भागने लगता है।
किट्टी-अदरक उसको दौड़ कर पकड़ते हैं।
भाग क्यों रहे हो? हमसे बात करो।
देखो खूबीलाल की बॉडी और बाल कितने अच्छे हैं। तुम्हे नहीं पता कि मुझे कैसा लगता है जब वो मुझे हाथी बुलाता है। ऐसे में, मैं अपनी तुलना खूबीलाल से कैसे ना करूं!

विवेक की बात सुनकर किट्टी, तारा, अदरक भी उदास हो जाते हैं।

विवेक की बात सुनकर सबको मामला समझ आ जाता है।

मैं चश्मा लगाती हूं, किट्टी नहीं लगाती। पर मै क्यों सोचूं कि मुझे किट्टी जैसा दिखना है। मैं तारा हूँ और तारा ऐसी ही अच्छी है। किसी के जैसी नहीं, बस खुद के जैसी।
विवेक, अपनी तुलना खूबीलाल से करके तुम खुद परेशान हुए ना? अगर कोई चिढ़ाता है तो जो भी तुम्हारे सबसे नजदीकी हो, जिस पर तुम भरोसा करते हो, उसको बताना चाहिए।
मुझे बात समझ आ गयी। अब मैं अपनी तुलना किसी से नहीं करूंगा।
मुझे अब समझ में आ गया है कि दूसरों के साथ अपने रंग-रूप की तुलना करना कितना हानिकारक हो सकता है। इससे रिश्ते बिगड़ सकते हैं। तुलना करके हम खुद और दूसरों को दुःख पहुंचाते हैं।

मुझे माफ कर दो विवेक, मैंने तुम्हें हाथी बोल के चिढ़ाया। मैं अब ऐसा कभी नहीं करूंगा।
अब ये तो बता दे, हाथी कहाँ है?

विवेक सबको खेत में ले जाता है।
वहां गन्ने के बड़े से ढेर के पीछे हाथी खड़ा होता है।

अगले दिन फिर से बदलीपुर के बच्चे हाथी पर घूमने लगे।

कहानी की सीख

इस कहानी से आपने क्या सीखा?

अपने आपकी तुलना दूसरों या अभिनेताओं से करना स्वाभाविक है। हम सिर्फ उन लोगों से ही अपनी तुलना करते हैं जो हमारे हिसाब से हमें अपने से बेहतर लगते हैं।

लुक्स की तुलना हानिकारक है। जब हम लुक्स की तुलना दूसरों से करते हैं तो हम एक ऐसे जाल में फंस जाते हैं जिसमें हम जितना भी दूसरे की तरह दिखने की कोशिश करते हैं, हम उस तरह नहीं लग पाते हैं। फिर हमें और भी बुरा लगता है। हमें देखकर हमारे दोस्त भी अपनी तुलना दूसरे लोगों से करना शुरू कर देते हैं। इससे यह होता है कि हम दूसरे लोगों की तरह के लुक्स यानि रंग-रूप पाने, उनकी तरह दिखने का दबाव महसूस करते हैं।
इस तरह सभी लोग जो अपने लुक्स की तुलना किसी और से करते हैं, वो इस जाल में फंस जाते हैं।

दूसरों से अपने लुक्स की तुलना करना बेकार है।
सब लोग अपने आप में अलग हैं।
हमें एक दूसरे की तरह दिखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
हमें अपने अनोखेपन को अपनाना चाहिए।

अवश्य खेलें

थोड़ा समय निकाल कर सोचिए कि आपने इस कहानी से क्या सीखा। नीचे दी गयी लिस्ट पढ़ें। आप देखेंगे कॉलम A और B में कुछ वाक्य दिये गये हैं। कॉलम A के वाक्य पढ़ें और ये बतायें कि कॉलम B में ऐसा कौनसा है जो कॉलम A के वाक्य से मिलता है।

A	B
1 आप और आपके दोस्त साथ में कहीं जा रहे हैं। आपका दोस्त आप से कहता है, काश मैं तुम्हारी तरह गोरा होता।	1 यह इसलिए है क्योंकि मैं रंग को साफ और गोरा करने वाली एक नयी क्रीम लगा रहा/रही हूं। इसे मैंने एक विज्ञापन में देखा था।
2 आप और आपका दोस्त एक बॉलीवुड फिल्म के पोस्टर के पास से गुजरते हैं। आपका दोस्त कहता है, काश मैं भी इस पोस्टर में दिख रहे अभिनेता जितना अच्छा लगता।	2 खुश रहने के लए यह ज़रूरी नहीं है कि आप गोरे हों। आप अपने रंग-रूप से बढ़ कर हैं।
3 आपका दोस्त आपकी एक तस्वीर देखते हुए कहता है, तुम्हारे बाल कितने घने हैं... काश मेरे भी होते।	3 सोचो अगर हमारे एक जैसे बाल होते, तो कितना बोरिंग होता। यह तो अच्छी बात है कि हम दोनों अलग लगते हैं और ये हमें अनोखा बनाता है।
4 आपकी दोस्त क्लास में बैठी हुई एक लड़की को देख कर आपसे कहती है, देखो, उसके हाथों पर कितने कम बाल हैं। मेरे हाथ पे तो कितने सारे बाल हैं।	4 हां, मेरा भाग्य बहुत अच्छा है कि मेरे बाल इतने घने हैं। पर तुम परेशान मत हो। कम से कम तुम्हारे मुंहासे तो नहीं हैं।
	5 लेकिन असल में ये ऐसा नहीं दिखता। यह अभिनेता अच्छा तो लग रहा है, लेकिन यह तस्वीर असलियत नहीं है।
	6 हां, हम अगर इस अभिनेता की तरह अच्छे लगते तो हमारे भी बहुत दोस्त होते।
	7 ऐसा मत सोचो। हां, विज्ञापनों में ऐसी बहुत सारी शरीर से बाल हटाने वाली सामग्री दिखायी जाती है। लेकिन यह सब सामान बेचने के तरीके हैं।
	8 हां और वो इतनी पतली भी है। काश मैं भी उसकी तरह दिखती।

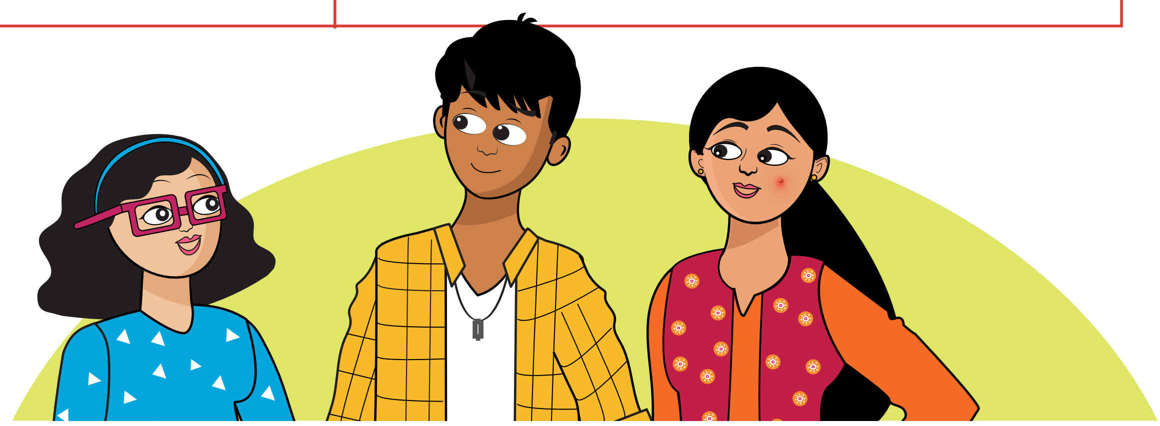

इच्छा हो तो यह भी खेलें

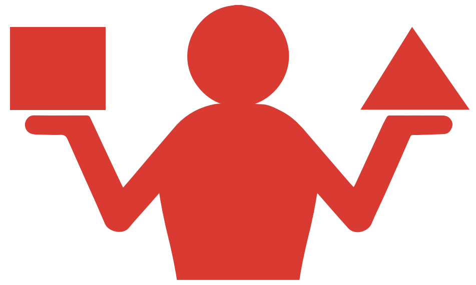

नीचे चार वाक्य दिये गये हैं।
ये वाक्य रंग-रूप की तुलना करने वालों पर आधारित हैं।
इस बात को ध्यान में रखते हुए इन्हें पूरा करें।

उदाहरण: हमें अपने गुणों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि वो हमें अनोखा और अलग बनाते हैं।
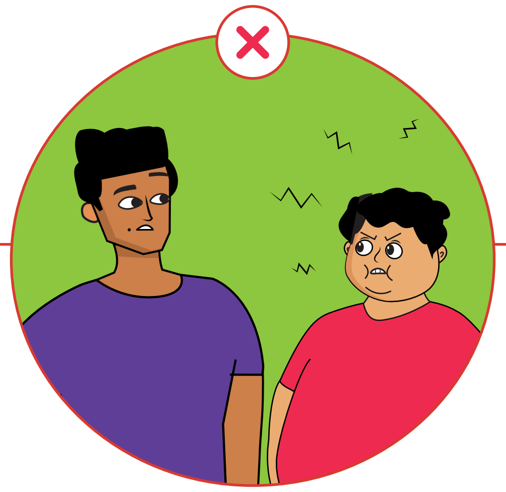
- दूसरों के रंग-रूप से अपनी तुलना करना स्वाभाविक है क्योंकि...
- जब मैं अपने रंग-रूप की तुलना अभिनेताओं से करता/करती हूं, मुझे लगता है...
- अपनी तुलना अपने दोस्तों से करना हानिकारक है क्योंकि...
- हमें दूसरों से अपने रंग-रूप की तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि...